# Saher

POETRY BY SUHAIL SHARIK

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

**BLUEROSE PUBLISHERS**
India | U.K.

Copyright © Suhail Sharik 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-544-1

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: November 2025

# Foreword:

I am greatly indebted to the fabulous four — Nehal, my Parents, Saher, and Sahir — for inspiring me every step of the way.

My heartfelt gratitude to my lovely wife Nehal, who patiently endured my shenanigans; and to my parents, whose unwavering encouragement taught me to keep listening and reading.

A word of love to my precious daughter Saher, she truly brought a new dawn into my life — and to my wonderful son Sahir, whose presence completes our little universe.

# Table of Contents

श्री राम ........ 1
मुंबई चलते हैं ........ 2
दुश्वारियां ........ 3
जिस्म-फ़रोशी ........ 4
बिल्लू मामा ........ 5
आज का हिंदुस्तान ........ 6
टॉवर ........ 7
बहुत दिनों से हम सोये नहीं ........ 8
मौत का तार ........ 9
दुनिया के मेले ........ 11
जीवन और प्रकृति ........ 12
पैसा ........ 13
दंगे ........ 14
पी लेता हूँ कमबख्त शराब ही तो है ........ 15
ज़िंदगी ........ 16
घर ........ 17
बुलबुले नहीं ज़लज़ले हैं ........ 18
रेहड़ी वाला ........ 19
भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी ........ 20
साहिर का जन्म ........ 21

मायूसी ........................................................................ 22
टूटा हूँ, बिखरा तो नहीं ........................................................................ 24
सफर ........................................................................ 25
बीवी की नई गाड़ी ........................................................................ 26
मुकाम और मकान ........................................................................ 27
हिंदी और उर्दू ........................................................................ 28

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

Saher ........................................................................ 29
Pandora ........................................................................ 30
Wish we could touch everyone's life ........................................................................ 32
Giving up is an easy choice ........................................................................ 33
Dada Ganguly ........................................................................ 34
Give your daughter wings to fly ........................................................................ 35
Tiger ........................................................................ 36

# श्री राम

राम निरंकार हैं, राम आकार हैं,
राम दिशा हैं, राम दशा हैं
राम दया हैं, राम माया हैं
राम मर्यादा हैं, राम अंगारा हैं
राम निश्चय हैं, राम आश्रय हैं
राम सोच हैं, राम संकोच हैं
राम अवतार हैं, राम परम्पार हैं
राम पुत्र हैं, राम मित्र हैं
राम परिवर्तन हैं, राम मंथन हैं
राम श्रृष्टि हैं, राम धृष्टि हैं
राम हमारे हैं, राम तुम्हारे हैं
राम विचार हैं, राम संस्कार हैं
राम अतीत हैं, राम प्रतीत हैं
राम समर्थ हैं, राम परमार्थ हैं

# मुंबई चलते हैं

व्यथा और व्यवस्था की चौपत चौपाती चलते हैं
शहर को सागर से निगलते हुए देखने चलते हैं
आज रविवार है, चलो मुंबई चलते हैं।

क्षितिज से चुंबन लेती इमारतों का नाप लेने चलते हैं
देखे यहाँ इंसान जानवर जैसे पलते हैं
आज रविवार है, चलो मुंबई चलते हैं।

ठेकादारों और साहूकारों के लगे यहाँ पे मेले हैं
खोखले वादों और कमीशन के सब चेले हैं
आज रविवार है, चलो मुंबई चलते हैं।

हर शाम-सुबह मुंबई कैसे बिकती है
लेकिन मुझे कहीं उम्मीद की किरण दिखती है
आज रविवार है, चलो मुंबई चलते हैं।

जागो तरूण ले लो वापस शहर अपना
बहुत देखा सिंगापुर का सपना
आज रविवार है, चलो मुंबई चलते हैं।

सपनों के इंद्रधनुष से ही सही मुंबई को सजाते हैं
आज रविवार है, देर हो गई, अब हम सोने चलते हैं
आज अपनों से भी सपनों में ही मिलते हैं।

# दुश्वारियां

दुश्वारी में जिंदगी को देखा करीब से
अब दिखते हैं अपने भी अजीब से।

अब कोई उम्मीद नहीं दीन या नबी से
पता नहीं हो गये काफिर कभी से।

अब वक्त है मेरे पास उधारी से
ज़िंदगी ने पटका कुछ बराबरी से।

गूँजने लगी है चीख अपने जानी सी
मानो इशारा देती है सन्नाटे में किसी की।

# जिस्म-फ़रोशी

यहाँ जिस्म बिकता है, मन नहीं
जिस्म का बाजार है, घर नहीं।

हमने जुल्म इतने सहे अपनों के
अब जुल्म जमाने के कम सही।

रोज़ रात लाती है तूफान
अब सूरज का भी हमें गम नहीं।

माना जिस्म है बिकाऊ हमारा लेकिन
वतन और ईमान के दलालों पे तंज नहीं।

सुन्न हो गई है रुह बाज़ार में
गिनती हूँ कितने हैं शरीफ कतार में।

# बिल्लू मामा

अब उनके याद में अश्क रुकते नहीं हैं
ये दर्द के मंज़र भी सहते नहीं हैं।

याद और दर्द का ग्रहण लग गया
मामी का दुल्हा अर्थी पर सज गया।

वो एक हँसी थी, उनका एक लतीफा था
सबको हँसा के खुद सहने का वो तरीका था।

आज वो गुलाब हमारे साथ नहीं तो सही
बहारें वापस ले आए लेकिन खुदा तो नहीं।

कहीं तो कुछ कहीं उनके साथ बाकी रह गया
देखो प्यासा कारवां चल रहा और साकी रह गया।

# आज का हिंदुस्तान

ये मज़हब पे होते हुए कत्ले-आम
ये खून में दहलती हुई प्यासी शाम
जिन्हें नाज़ है हिंद पे, वो कहाँ हैं
ये बदलते हुए मज़हब के उसूल
ना किसी का भगवान ना किसी का रसूल
जिन्हें नाज़ है हिंद पे, वो कहाँ हैं
ये पैसे का सस्ता लगता बाज़ार
चौराहों पर बिकता कौड़ियों में प्यार
जिन्हें नाज़ है हिंद पे, वो कहाँ हैं
ये माँ का छूटता हुआ आँचल
भूल गए परिवार के साथ वो हँसते हुए पल
जिन्हें नाज़ है हिंद पे, वो कहाँ हैं
ये शराब और दोस्ती पे भटकती जवानी
शराब बहते हैं जैसे मुफ्त पानी
ये सरकार के तख्त पे होते हुए सौदे
हमारे आँगन में सूखते हुए क्यों पौधे
जिन्हें नाज़ है हिंद पे, वो कहाँ हैं
वो शिकार होती हुई देखो कोख में बेटी
बिक गई देखो आज एक और खेती
जिन्हें नाज़ है हिंद पे, वो कहाँ हैं !

# टॉवर

तू इतना ना ऊँचा हो कि तुझे देख ना सकूँ
तू कद इतना भी नीचे मत कर
कि तपती धूप से तेरा साया ना हो
और मुझे यूँ लगे
मैंने सड़क से तुझे पाया ना हो।

तू इतना मामूली भी मत बन कि मुझे गम रहे
तू इतना फ्लोर राईज मत बढ़ा कि मेरे सपने कम रहें
तू इतना बुलंद भी ना बन कि मेरे गाँव की दहलीज तक आए
तू इतना मंद भी ना हो कि ये शहर तुझे ही निगल जाए।

# बहुत दिनों से हम सोये नहीं

बहुत दिनों से हम सोये नहीं
सिसक-सिसक के रोये नहीं।

है हमसफर की आस आज भी मुझे
खुशी के डर से वो राह पे मुड़े नहीं।

ढूँढते रहे अतीत को वीरानों में
इन वादियों के क्यों हम हुए नहीं।

आऊँगा वो रहगुज़र से तेरा मंज़र देखने
वो खोकली बाते और धोका तो भूले नहीं ?

# मौत का तार

फिर आया है मौत का तार
अब बहुत सह लिया तूने मेरे यार
मान लो इस दुनिया से हार।

जिया तू कम नहीं, कहता है यार
हमेशा रहा ज़िंदगी के लिए बेकरार
अब भी बेसुनी है तेरी पुकार
वक्त कम है कर ले अपनों से इज़हार
फिर आया है मौत का तार।

पहले कभी वक्त पे आया नहीं
ये दस्तक बेवक्त ही सही
सिर्फ मुझे ही आया तार
वैसे भी ज़िंदगी है दुश्वार।

जवाब में लिखता हूँ
अब मैं कितना सहूँ
तार क्यों भेजते हो हर वक्त
साथ चलने के मेरे इरादे हैं सख्त।

बस आ जाओ अब कोई मुरव्वत नहीं
मुझे ज़िंदगी की ज़रूरत नहीं
अब तार ना भेजना, खुद आना
मुझे अपनी आगोश में ले जाना।

# दुनिया के मेले

हम-तुम दोनों अकेले हैं
चल रहे दुनिया के मेले हैं
हमारे सपने ना हों कभी बर्बाद
हमारा गुलशन रहे आबाद।

जब कभी तूफान आया
मुझे मिला तुम्हारा साया
हम हमेशा रहें साथ
मेरे हाथों में तेरा हाथ।

शीशे के हैं महल
कौन करे प्यार की पहल
सच्ची बात हमेशा थी कम
इसी बात का है गम
लेकिन तुम्हारा है साथ
होती रहती है दिल से दिल की बात।

कभी तन्हाई बेबसी भी कहती है
तुमसे ना कहूँ उनकी बातें
खामोश ही सहता रहूँ मैं
लेकिन मेरा कोई अंश तुम्हारा हक है
यही अपनों और परायों में फर्क है।

# जीवन और प्रकृति

आज फिर क्षितिज ने सूरज को निगला है
फिर चाँद ऊपर चढ़ेगा
कुछ के लिए कुछ नया नहीं
ये ज़िंदगी एक सजा सही।

कल शायद एक सवेरा आये
फिर सूरज को धरती सर चढ़ाये
और सूरज के जैसे उधार की ज़िंदगी ढल जाये।

सूरज-चाँद ने साथ निभाया
जब अपना कोई हो गया पराया
दिन-ब-दिन मुझसे वादा निभाया
मेरे हमजर्फ ही रहे हमेशा
ऊपर से देखते रहे मेरी सज़ा
चिलचिलाती धूप लेकिन छाँव नहीं
ये शहर मेरा गाँव नहीं।

# पैसा

आज खुदा ही पैसा है
चल रहा दौर कुछ ऐसा है
क्या अंजुमन की बात करें दोस्तों
आज रकीब भी खुद अकेला है।

शिकस्त ना कोई अपना ही दे मुझे
ज़िंदगी एक लँगड़ा प्यादा है
ईमान नीलाम होने पे आमदा है
ये शतरंज का खेल कैसा है
आज खुदा ही पैसा है।

शराफत का दाम ज्यादा है
इसका बिकना आज कायदा है
तुम शायद खरीद ना पाओ मुझको
दिल के किसी कोने पे अपना नेक इरादा है।

# दंगे

आज हैवानियत की इंतेहा नहीं है
इंसान के पास रहम-ओ-मोहब्बत नहीं है।

आज हम भी दुश्वारी में जी लेते
कोई पीठ पे हाथ रखने वाला नहीं है।

किसके पास जाएं लेकर दिल का दर्द
कोई मजबूरी का सामान भी नहीं है।

थी उम्मीद आज हमदर्द से लेकिन
इस दर्द का कोई मज़हब नहीं है।

इस जुनून में इंसाफ तो कर दे कोई ,
आज ईमान का कोई ऐतबार नहीं है।

समझौता किस्मत से आज कर लेंगे हम
इसके अलावा और कोई चारा भी नहीं है।

# पी लेता हूँ कमबख्त शराब ही तो है

पी लेता हूँ कमबख्त शराब ही तो है
होगी सेहत खराब पर दवाई का जवाब ही तो है।

चले हैं कुफ्र फिर उसी शराबखाने तक
वहाँ से शरीफों का आना-जाना ही तो है।

है सिर्फ अच्छाइयाँ सभी दुनियादारों में
लेता हूँ गर कभी मुझमें खराबी भी तो है।

शहर ने रोज मारके सुबह जगाया मुझको
सस्ता सा शराब का सहारा ही तो है।

# ज़िंदगी

एक ज़िंदगी कम है ज़िंदगानी के लिए
वक्त कम है अब बिताने के लिए।

रोक लो उसे चला है वो गुमराही पर
ना बुलाने के तू ना गुस्ताखी कर।

हो गए हैं बेनाम बहुत, नामचीन होने के लिए
एक ज़िंदगी कम है ज़िंदगानी के लिए।

कुछ करके याद करें रहनुमाई के लिए
समझे तुझे तेरी गहराई के लिए।

वो लौं बन जो बुझे गैरों की रौशनी के लिए
एक ज़िंदगी कम है ज़िंदगानी के लिए।

कोई साथ नहीं निभाता हर किसी के लिए
तेरा सफर है बस तेरी उम्मीद के लिए।

कम हैं तेरे कसीदे तेरे अफसाने के लिए
एक ज़िंदगी कम है ज़िंदगानी के लिए।

ना वक्त थमा है ना मंज़िल किसी के बुलाने के लिए
चलते रहना पड़ता है हमराही के लिए।

मयकदे भी तरस जाते हैं यहाँ साकी के लिए
एक ज़िंदगी कम है ज़िंदगानी के लिए।

# घर

ये घर है सपनों का
रकीब और अपनों का
ख्वाहिश और अरमानों का
दुआओं की साजिश का।

ये घर है लहू और आँसू का
बेइंतेहा मोहब्बतों का
सुख, हँसी और अश्क का
आसमान और फर्श का।

ये घर है हमारे जोश का
रुसवाई और होश का
ये घर है इंतेहा का
ये घर है इम्तिहान का।

ये घर है रेत और ईंटों का
उन अनसुने दफन गीतों का
मेरे परिवार के हर खुदगर्ज़ का
कहीं बीते हुए रहगुज़र का।

# बुलबुले नहीं ज़लज़ले हैं

बुलबुले नहीं ज़लज़ले हैं
दरिया में डूब के साहिल तक चले हैं
रास्ते और मंज़िल फूलों के भी थे
इज़्ज़त और ईमान के काँटे चूम के चले हैं
अच्छों से अच्छे मुतासिर होते हैं लेकिन
हम तो हमारे कातिलों का खंजर भी लेके चले हैं
शोर होता है थोड़ा भी मकबूल होकर
कहीं जद्दोजहद का सन्नाटा भी लेके चले हैं
आज़मा लो मुझे इस शहर के सेहरा में
हम भी हमारे अश्क पीकर चले हैं।

# रेहड़ी वाला

वो मासूम खुला रास्ता
यादों का भागीदार है
वो ठेला वाला मज़लूम
तकदीर और हफ्ते का शिकार है

तरकारी और फल पर ही नफा-नुकसान नहीं
पॉश मैडम पे फतह की मुस्कान नहीं
मजबूरी और ज़रूरत रास्ते का हिस्सा हैं
कहीं छुपा टमाटर और गुट्टर का किस्सा है
होम डिलीवरी में अभी वो पीछे हैं
तेज़ दुनिया के सपने भी उसने सींचे हैं
लेकिन सिर्फ क्यूआर कोड का स्कैन है
गाँव में बूढ़े और भाई-बहन हैं।

# भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी

आप अटल हो, आप सफल हो
आप संघ हो, आप अभिन्न अंग हो
आप सवाल हो, आप हल हो
आप पराजय हो, आप विजय हो
आप पुरुषार्थ हो, आप सार्थ हो
आप बंधु हो, आप अजातशत्रु हो
आप बलिदान हो, आप समर्पण हो
आप संघर्ष हो, आप विश्वास हो
आप अभिमन्यु हो, आप चक्रव्यूह हो
आप भीष्म हो, आप कृष्ण हो
आप विवाद हो, आप संवाद हो
आप चिंतन हो, आप मंथन हो
आप विवेचना हो, आप चेतना हो
आप सच्चे हो, आप ऊँचे हो
आप अटल हो !

# साहिर का जन्म

आज चली है सर्द हवा वक्त की
इस सेहरा में धूप भी कभी सख्त थी

इतनी दुआओं के बाद ईश्वर ने सुना तो सही
ये सच है हम कायनात तो नहीं

मत पूछो साहिर क्या खोया क्या पाया
तेरे सर पे रहे खुशियों का साया

इतनी दुआओं, मन्नतों के बाद आये हो तुम
हसीन फिजाओं में हो गए हैं गुम

दुआ है हमें कभी नज़र ना लग जाए
कामयाबी कदम चूमें तुम्हारी और मंज़िलें फूल बरसायें।

# मायूसी

हर तरफ बेबसी क्यों, मायूसी क्यों है
मुरझे हैं फूल. शहद भी फीका सा क्यों है

आदमी इतना टूटता क्यों है, पैसा सबसे जुड़ा क्यों है
रात में नींद उधार की क्यों है
अपनी पूरी नींद के लिए बेकरारी क्यों है
वतन की नींद आज प्यारी क्यों है
हर तरफ बेबसी क्यों, मायूसी क्यों है।

आज किसके पास किसी का वक्त क्यों है
अपने लिए जिंदगी सख्त क्यों है
आज जाने चेहरे बेगाने क्यों हैं
हर किसी के कंधे पर किसी का सामान क्यों है
इंसान के पास सिर्फ अपमान क्यों है
हर तरफ बेबसी क्यों, मायूसी क्यों

आज उधार की ज़िंदगी लाचारी क्यों है
हर तरफ भुखमरी बीमारी क्यों है
आज पैसा ही खुदा क्यों है
मेरा हमदम मुझसे जुदा क्यों है
आज आदमी सुकून का कायल क्यों है
अपने ही लहू का घायल क्यों है।

आज मेरे पास आपके लिए सवाल क्यों है
हर सवाल का जवाब सवाल क्यों है
इंसान का ज़मीर आज बाज़ारु क्यों है
आज सबकी लुटी आबरू क्यों है
हर इंसान की कीमत क्यों है
ये बाज़ार लगा क्यों है।

# टूटा हूँ, बिखरा तो नहीं

टूटा हूँ, बिखरा तो नहीं
दफ्न हुआ हूँ, मरा तो नहीं।

हालात के शतरंज में फँसा यूँ
बहरहाल ये शिकस्त तो नहीं।

क्षितिज पे तारा टूटा है
ज़मीन पर कोई तूफान तो नहीं।

अभी बने हैं जल के आफताब हम
देखे दुनिया ये नई सहर तो नहीं।

# सफर

ये क्या सफर का सिलसिला है,
ना कोई शिकवा ना गिला है
किस दोराहे के हम हैं
सब होते हुए भी क्यों गम है
हमें उनपे इनायत क्यों है
उनको हमसे शिकायत क्यों है
आज हर सवाल का जवाब सवाल है
देखिए यही आज कमाल है

किसकी ज़र्रा-नवाज़ी, किसका ताना है
मेरे कातिल का मेरे घर आना-जाना है
कुछ ज़िंदगी से ऐसा ताना-बाना है
हमने भी सबको अपना माना है
ये तकल्लुफ है कि हमें भी जीना है
ज़िंदगी को मदहोशी से पीना है

ये ज़िंदगी अब ढल रही है
कुछ आखिरी उम्मीदें पल रही है
हमसफर जब ना रहेगा मेरा सहारा
देखना क्षितिज पे रहेगा मेरा तारा।

# बीवी की नई गाड़ी

देखो आई परिवार में नई गाड़ी
पहनेंगे सैया नई शर्ट
और हम शिफॉन की नई साड़ी
थोड़ा सा पाउडर और चुटकी भर लाली।

हवाओं से बात करती अपनी सवारी
रास्तों से और पवन से पक्की यारी
थोड़ा बचत की लगेगी मार
देखो लाइव मोबाइल पर हम ही सवार।

रखना धरती पर पाँव सैया
ज़िंदगी है धूप और छाँव
थोड़ा धीमे रास्ते पे है हलवाई
आज मोहल्ले जो दूँगी रबड़ी और मलाई।

# मुकाम और मकान

ज़िंदगी में मुकाम और भी हैं
उनको सुनाने के लिए कलाम और भी हैं
हम भी गुर्बत में जी लेते लेकिन
इस दुनिया से दरमयां और भी हैं।

डर है ये शहर में भटक जाऊँगा कहीं
मुझसे पहले यहाँ गुमराह और भी हैं
रहने दो मेरा घर सबूत-ए-सौदागरों
लूटने के लिए यहाँ महल और भी हैं।

# हिंदी और उर्दू

है वो भूखे शायर की आह उर्दू
कभी बैठकें की चाह उर्दू
कहीं मरते हुए शायर की साँस उर्दू
उभरते हुए कलाम की आस उर्दू
भारत के प्यार की आवाज उर्दू
इतिहास के सवाल का जवाब उर्दू
तहज़ीब और मौसिकी का सबाब उर्दू।

है मीर और गालिब की आन उर्दू
कभी बुल्ले शाह की शान उर्दू
ज़ुबान-ए-हिंद की भाई उर्दू
जहाँ ढूँढी हिंदी मैंने पायी उर्दू।

# Saher

the wait has been worth it,
we have prayed every bit,
how we have longed for god's grace,
to see your blessed face.

OH! When u caught my finger,
the feeling will ever linger,
there was a mischievous sly,
in your lovely eye.

a bundle of joy with all you might,
ushering in joy to rid us of our plight,
every day we yearn and learn,
flooding us within with fun.

whatever life beckons may u have your say,
that's all what we pray,
may you spread the infectious smile,
and god be with you every step and mile.

# Pandora

Summer is the season we take all care,
our natural resources dry and bare,
scorching heat and sun tan,
soaring humidity, coolers and fan;
bearing all as only we can!
A days' work all hot and humid,
how very tiring and insipid!

Rain water gushes through many a stream,
scenario making our farmers beam,
the season when the fauna mate,
also decides the farmer's fate.
Water reserves and dams on a surge,
but low-lying places do submerge,
there's relief from summer I would say,
but heavy downpours cause disarray!

Well winters here get the woolens out,
dipping temperatures leave no doubt,
all around there's frost and mist,
this is very much the winter gist.
Some are lucky to have the winter snow,
how nature has put up a show!

The weather's changing true and fair,
like us it must get rid of despair,
our life is nothing but hot and cold,
let's face it upright and bold!

# Wish we could touch everyone's life

Wish we could touch everyone's life,
Helping hands in our daily strife,
Glow in the dark, bit of sunshine,
In today's age and time.

Sorrows and pain, victory and gain,
Are just mind's game,
The weather changes, true and fair,
Like it gets rid of despair,
Little bit of sour, and lots of sweet
Just enough to make ends meet.

# Giving up is an easy choice

Giving up is an easy choice,
oh, to walk in to the sunset
would be so nice!

Sometimes I thought I should give it away,
Surrender and let fate have its way,

It's sometimes easier to quit,
And see me crumble,
Bit by bit.

Give me strength god to grovel in dust and grime,
successful are those who tried one last time
Winners never quit,
Quitters never win,
Shrugging responsibility is indeed a sin.

# Dada Ganguly

a tiger bids farewell without changing its stripes,
he roared and hunted amidst the expectations and hype,
fought with leadership instilling team india with pride.

his off-side strokes were a connoisseur's delight,
driving through mid-off and the square with all his might,
never did he let his chin down in adversity,
facing the dusk of his career with dignity.

a leader most revered and feared by his peers,
the southpaw evoked his mates' respect and cheers,
he did too court controversy,
rising like a phoenix in his come-back history.

dada, the time comes to hang up the boots,
time to return back to the roots,
a candle flickers most just before burn out,
hope this swansong series enhances your clout.

# Give your daughter wings to fly

Give your daughter wings to fly
Always eager to learn, never too shy,
Encourage her to be curious, ask her to try.

never judge and call her weak,
By discrimination you make her meek
Don’t hurt her, don’t make her cry,
Give your daughter wings to make her fly.

Fight others who put her down
The hand that rocks the cradle
Wears the crown!

Don’t kill your daughter in the womb
Let her grow, let her bloom
Give her space, give her room
She will hold her own even in gloom

Give your daughter wings to fly.

# Tiger

Graceful predator and unbound grace; centre of jungle folklore,
Whenever majesty is sought- tiger comes to fore,
Merging with meadows camouflaging its might,
For meek and hunted there is no respite.
With stealth and camouflage tiger hunts,
Unnoticed in his prowl meek shall bear the brunt.

With ferocity and grace tigers mate,
Giving new lineage to their fate,
Cubs abound to learn the survival game
Natural instincts difficult to tame!
Unruly do invite senior's ire,
Brought up with love and desire.

Act we must and save it from being extinct,
Or the king will fade away without a hint,
Pristine woods too rests on tigers fame,
If we were to lose both it would indeed be a shame